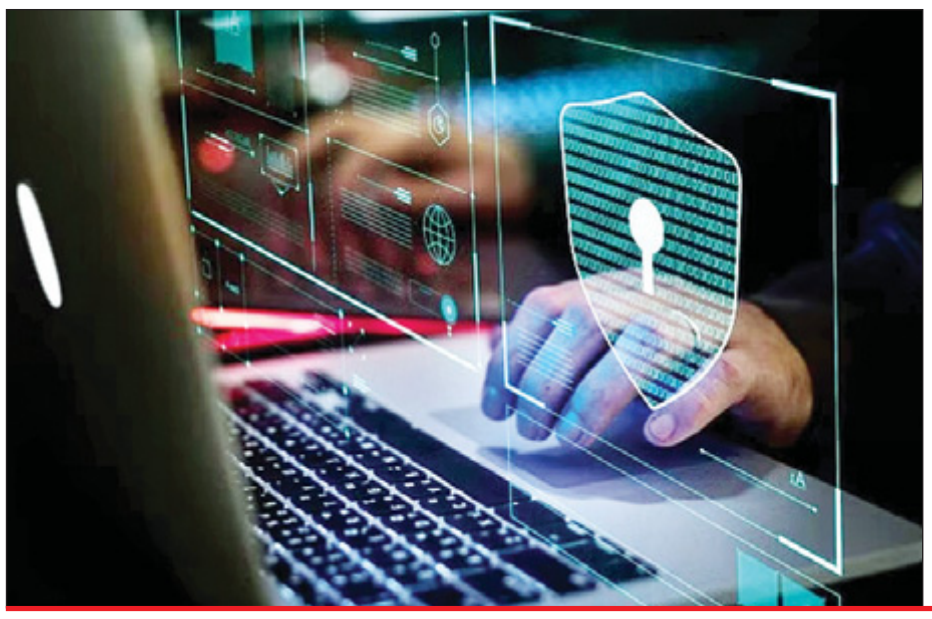

ऑनलाइन सेंधमारी की क्षमता हासिल कर लेने के चीन के दावे से दुनिया भर में चिंता

हांग कांग ।
चीन के शोधकर्ताओं ने इस हफ्ते चौंका देने वाला दावा किया है। दुनिया भर के कंप्यूटर सुरक्षा विशेषज्ञ इसकी सच्चाई जानने के लिए माथापच्ची कर रहे हैं। चीनी शोधकर्ताओं का दावा अगर सही है, तो उसका मतलब यह होगा कि चीन दुनिया के किसी भी ऑनलाइन इन्क्रिप्शन (कोड यानी पासवर्ड) को तोड़ने में सक्षम हो जाएगा। पहले विशेषज्ञों का अनुमान था कि किसी देश को ऐसी क्षमता हासिल करने में अभी कई पीढ़ियां लगेंगी। लेकिन अगर चीनी दावा सही है, तो उसका मतलब यह है कि यह खतरा अब सारी दुनिया के सिर पर मंडरा रहा है। इस रिपोर्ट के मुताबिक चीन में एक विज्ञान अनुसंधान पेपर दिसंबर के आखिर में प्रकाशित हुआ। उसमें उस विधि का जिक्र है, जिससे आरएसए एल्गोरिद्म को तोड़ा जा सकता है। यह कार्य सिर्फ 372 क्यूबिट्स के क्वांटम कंप्यूटर से किया जा सकता है। (क्वांटम कंप्यूटिंग की बुनियादी इकाई क्वांटम बिट्स है, जिसे संक्षेप में क्यूबिट्स कहा जाता है)।

पेपर में दी गई जानकारी के मुताबिक यह विधि तैयार करने में विभिन्न शैक्षिक संस्थानों और सरकारी प्रयोगशालाओं के 24 अनुसंधानकर्ताओं ने भूमिका निभाई है। कंप्यूटर सिक्योरिटी विशेषज्ञ रॉजर ग्राइम्स ने कहा है कि यह अनुसंधान कंप्यूटर सुरक्षा के इतिहास में एक बहुत बड़ा पल है। उन्होंने कहा- 'यह बहुत बड़ा दावा है। इसका अर्थ यह होगा कि एक सरकार किसी दूसरी सरकार की गोपनीय सूचनाओं तक पैठ बना लेगी। अगर यह दावा सच है तो यह कंप्यूटर विज्ञान के इतिहास में हुई सबसे बड़ी घटनाओं में एक है। दूसरे विशेषज्ञों का कहना है कि शोध पत्र में जिस सिद्धांत का जिक्र है, उसमें दम नजर आता है। लेकिन अभी क्वांटम टेक्नोलॉजी की जो क्षमता मौजूदा है, उससे व्यवहार में ऐसा करना मुश्किल लगता है। अमेरिका के मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से जुड़े वैज्ञानिक पीटर शोर ने कहा- 'जितना बता सकने की स्थिति में मैं हूं, उससे नहीं लगता कि चीनी शोधपत्र गलत है।' शोर ने 1994 में ऐसा एल्गोरिद्म तैयार किया था, जो कंप्यूटर इन्क्रिप्शन को तोड़ने में सक्षम था। उनके उस शोध के बाद क्वांटम कंप्यूटिंग के शोध का नया दौर शुरू हुआ था। लेकिन उनकी विधि से कंप्यूटर इन्क्रिप्शन को तोड़ने के लिए लाखों क्यूबिट्स की जरूरत होगी।

न्यूज ब्रीफ

रिचर्ड वर्मा अमेरिकी विदेश उपमंत्री नामित, बाइडन के फैसले का भारतवंशियों ने किया स्वागत

वॉशिंगटन । अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने वकील और राजनयिक रिचर्ड वर्मा को विदेश उपमंत्री नामित किया है। सीनेट की मुहर के बाद वर्मा विधिवत पदभार संभालेंगे। बाइडन के फैसले का भारतीय-अमेरिकी निकाय ने स्वागत किया है। यदि सीनेट द्वारा रिचर्ड वर्मा की नियुक्ति की पुष्टि कर दी जाती है, तो वे अमेरिकी विदेश विभाग में सर्वोच्च रैंकिंग पाने वाले भारतीय-अमेरिकी होंगे। रिचर्ड वर्मा भारत में अमेरिकी राजदूत भी रह चुके हैं। इससे पहले दिसंबर में व्हाइट हाउस ने एलान किया था कि राष्ट्रपति बाइडन ने 54 वर्षीय वर्मा को अमेरिकी विदेश मंत्रालय में प्रबंधन व संसाधन मामलों के उपमंत्री के तौर पर मनोनीत करने का फैसला किया है। इंडियन-अमेरिकन इंपैक्ट फंड ने एक बयान जारी कर कहा कि यह मनोनयन मौजूदा अमेरिकी प्रशासन को और विविधिकृत करने के राष्ट्रपति बाइडन के संकल्प की दिशा में एक और ऐतिहासिक कदम है। भारतवंशियों के इस संगठन ने कहा कि वर्मा का अमेरिकी विदेश विभाग में शामिल होना उनके लंबे सार्वजनिक जीवन और शानदार करियर का नतीजा है। इंडियन अमेरिकन इंपैक्ट फंड के कार्यकारी निदेशक नील माखीजा ने कहा कि हम एक और दूरदर्शी दक्षिण एशियाई नेता के मनोनयन से रोमांचित हैं और स्वागत करते हैं। वर्मा लंबे समय से हमारे समुदाय के एक अनुकरणीय और अभिन्न सदस्य रहे हैं। हम राष्ट्रपति बाइडन द्वारा उन्हें अमेरिका के विदेश उपमंत्री के रूप में नामित करने के फैसले से उत्साहित हैं। उम्मीद है कि अमेरिकी सीनेट जल्द ही उनके नामांकन की पुष्टि करेगी। वर्तमान में मास्टरकार्ड के मुख्य कानूनी अधिकारी और कंपनी की वैश्विक सार्वजनिक नीति के प्रमुख रिचर्ड वर्मा ने 16 जनवरी, 2015 से 20 जनवरी, 2017 तक भारत में अमेरिकी राजदूत के रूप में कार्य किया।

बम की धमकी के बाद जापान के विमान की आपात लैंडिंग, क्रू मेंबर समेत 142 यात्री थे सवार

टोक्यो । जापान में एक विमान को उस समय आनन-फानन में लैंड करवाया गया जब एक अंतरराष्ट्रीय कॉलर ने विमान में बम रखने की सूचना दी। जापान प्रसारण निगम एनएचके ने घटना की जानकारी देते हुए कहा कि विमान शनिवार को टोक्यो के नरीता हवाईअड्डे से फुकुओका जा रहा था और इसी दौरान किसी शख्स ने विमान में बम रखने की सूचना दे दी। बम की सूचना मिलने के बाद विमान में अफरातफरी का माहौल पैदा हो गया। इसके बाद विमान को चुबु हवाईअड्डे की ओर मोड़ दिया गया। इसके बाद सभी 136 यात्रियों और चालक दल के छह सदस्यों को बाहर निकाल लिया गया। वहीं एनएचके ने पुलिस सूत्रों का हवाला देते हुए कहा कि आरोपी व्यक्ति ने विमान के कार्गो होल्ड में 100 किलोग्राम (220 पाउंड) प्लास्टिक विस्फोटक रखने का दावा किया और प्रबंधक से बात करने की मांग की। शख्स ने कहा कि अगर प्रबंधक से बात नहीं कराई गई तो वह उन्हें विस्फोट कर देगा। हालांकि, एनएचके ने कहा कि विमान में कोई विस्फोटक नहीं मिला है। एनएचके के अनुसार विमान से उतरते समय एक व्यक्ति मामूली रूप से घायल हो गया था, जिसने यात्रियों के आपातकालीन निकास द्वार से विमान को निकालने का फुटेज प्रसारित किया।

ऑस्ट्रेलियाई विमान में पायलट से जा भिड़ा यात्री, फिर ऐसी कार्रवाई जिसने अक्ल ठिकाने ला दी

सिडनी । हाल ही में एयर इंडिया विमान में बुजुर्ग महिला के ऊपर पेशाब करने करने का मामला सुर्खियों में रहा। जहां एक महिला ने आरोप लगाया था कि एक सहयात्री ने उसके ऊपर पेशाब कर दिया। इसके बाद विमान के क्रू मेंबर्स ने जबरदस्ती सुलह करवाने की कोशिश की। क्रू मेंबर्स ने पीड़िता के ऊपर दबाव डालने की बहुत कोशिश की। पीड़िता को अभी तक न्याय भी नहीं मिल सका है। लेकिन इस बार जो घटना घटी है वह ऑस्ट्रेलियाई विमान की है जहां एक यात्री पायलट से ही जा भिड़ा जिसके बाद उसे पहले कॉलर पकड़कर विमान से बाहर निकाला गया फिर ऐसी सख्त कार्रवाई की गई कि उसके अक्ल ठिकाने आ गए। इस घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। बताया जा रहा है कि यात्री दूसरे सहयात्री से बार-बार बदतमीजी कर रहा था जिसके बाद पायलट और क्रू मेंबर्स उसे समझाने आए लेकिन वह उल्टा भड़क गया। यह घटना टाउन्सविले-सिडनी उड़ान में उस समय हुई जब विमान टाउन्सविले हवाई अड्डे पर जमीन पर था। ट्विटर पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में बकेट हैट और पीले रंग के क्रॉक्स पहने एक व्यक्ति एयरलाइन क्रू के साथ बहस करते हुए दिखाई दे रहा है। बहस बढ़ने के बाद पायलट भी क्रोधित हो गया और उसने यात्री को यू आर ऑफ मेट कह दिया।

चीन में युवा खुद क्यों हो रहे कोरोना संक्रमित, जानें इम्युनिटी और बुजुर्गों की सुरक्षा से क्या कनेक्शन

बीजिंग ।
चीन ने देश में कोरोना विस्फोट के बीच अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए सीमाएं खोल दी हैं। इससे देश में उत्साह का माहौल है। घूमने फिरने के शौकीन युवाओं में कोविड का भय नहीं है। वे खुद को इस उम्मीद में कोविड संक्रमित कर रहे हैं, ताकि उनमें कोरोना प्रतिरोधक क्षमता आ जाए। जीरो कोविड पॉलिसी में ढील का अंजाम भोगने और देश में लाखों की तादाद में संक्रमित मिलने के बावजूद चीन ने सीमाएं खोलने का कदम उठाया। वहीं, अस्पतालों में न डॉक्टर मिल रहे हैं और न ही एंबुलेंस और न ही बेड। बुजुर्गों की जान सांसत में है। दूसरी ओर घूमने फिरने की आजादी मिलने से युवा खुद कोविड संक्रमण की जोखिम ले रहे हैं।

उनका मानना है कि इससे वे कोविड के खिलाफ इम्युनिटी हासिल कर लें और बार-बार होने वाले संक्रमण से बच जाएं। इससे उनके परिवार में रहने वाले लोगों के लिए संक्रमित होने का खतरा कम हो जाएगा।

युवा चीनियों में खौफ नहीं

चीन में कोविड को लेकर युवाओं की सोच जुदा है। वे अपनी खुशियों की खातिर कोरोना का खतरा मोल लेने को तैयार हैं। शंघाई के एक युवक ने कहा कि उसने कोई चायनीज कोरोना वैक्सीन नहीं ली है, इसके बाद भी छुट्टियों की योजना नहीं बदलेंगे। यह भी भरोसा है कि यदि मैं जानबूझकर संक्रमित हुआ तो ठीक भी हो जाऊंगा और छुट्टी के दौरान फिर से संक्रमित नहीं होऊंगा।

एक अन्य चीनी युवती ने कहा कि वह अपनी कोरोना पॉजिटिव दोस्त से मिलने गई, ताकि उसे भी कोविड हो सके।

देश की सीमाएं खुलने से रोमांचित

उधर, उत्तरी झेजियांग प्रांत की एक युवती ने कहा कि देश की सीमाएं फिर से खुलने से वह रोमांचित है। वह म्यूजिक कार्यक्रम देखने के लिए फिर से चीन के अन्य हिस्सों में जाने के लिए उत्साहित है। जीवन सामान्य होने की खुशी है। पहले यात्रा करने के लिए आफिस के मैनेजर से अनुमति लेना पड़ती थी, जीवन हास्यास्पद हो गया था।

सामान्य वक्त लौटा

चीन के बड़े शहरों में लोग मॉल, रेस्तरां और पार्कों में उमड़ने लगे हैं। विदेश यात्राओं के लिए वीजा और पर्यटन परमिट के लिए कतारें लग रही हैं।

बुजुर्गों को रही इलाज में मुश्किल

बीजिंग के चेन नामक व्यक्ति की मानें तो चीन में कोविड के इलाज का बुरा हाल है। उन्होंने बताया कि पिछले माह उनके 85 साल के पिता कोविड संक्रमित हुए तो उन्हें न एंबुलेंस मिली न डॉक्टर। जैसे तैसे उन्हें चायोयांग अस्पताल लेकर गए तो कहा गया कि वे या तो दूसरे अस्पताल जाएं या पिता को गलियारे में आईवी ड्रिप लगवाकर बैठ जाएं। वहां न बेड मिले, न श्वसन में सहायक मशीन और न अन्य मेडिकल उपकरण। हालांकि, विशेष संपर्कों के जरिए उनके पिता को दूसरे अस्पताल में जगह मिल गई, लेकिन तब तक उन्हें फेफड़े में गंभीर संक्रमण फैल चुका था, वह जैसे तैसे बचे हैं।

विमान में यात्री को पड़ा दिल का दौरा, भारतीय -ब्रिटिश डॉक्टर ने पांच घंटे की मशक्कत के बाद बचा ली जान

लंदन ।
एक भारतीय मूल के ब्रिटिश डॉक्टर ने लगभग पांच घंटे तक संघर्ष कर अपने साथी यात्री की जान बचा ली। बताया जा रहा है कि लंदन से बेंगलुरु जा रहे विमान में एक यात्री को अचानक दिल का दौरा पड़ गया। जिसके बाद वहां सभी लोग उसे बचाने के लिए परेशान हो गए। इसी बीच एक भारतीय-ब्रिटिश डॉक्टर देवदूत की तरह सामने आए और काफी जद्दोजहद के बाद उसकी जान बचाने में कामयाब हो गए। बताया जा रहा है कि उड़ान के दौरान शख्स को दो बार दिल का दौरा पड़ा। स्थित ऐसी हो गई थी कि वह मुश्किल से सांस ले पा रहा था।

ऐसे बचाई जान

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक बर्मिंघम के क्वीन एलिजाबेथ अस्पताल में काम करने वाले डॉ. विश्वराज वेमाला (48) अपनी मां के साथ विमान में भारत जा रहे थे, तभी एक साथी यात्री को दिल का दौरा पड़ गया। यह घटना नवंबर महीने की है। वेमाला ने यात्री को होश में लाने का प्रयास किया, जिसकी उस समय नाड़ी भी ठीक से नहीं चल रही थी और वह सांस नहीं ले पा रहा था। वेमाला ने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा कि उसे वापस लाने में मुझे लगभग एक घंटे का समय लगा और पूरी तरह से होश में लाने के लिए करीब पांच घंटे की मशक्कत करनी पड़ी। सौभाग्य से केबिन क्रू के पास एक आपातकालीन किट थी, जिसमें जीवन समर्थन को सक्षम करने के लिए पुनर्जीवन दवा शामिल थी। ऑक्सीजन और एक स्वचालित बाहरी डिफाइब्रिलेटर के अलावा, वेमाला, अन्य यात्रियों की मदद से, रोगी के महत्वपूर्ण संकेतों पर नजर रखने के लिए हृदय गति मॉनिटर, ब्लड प्रेशर मशीन, पल्स ऑक्सीमीटर और ग्लूकोज मीटर प्राप्त करने में सफल रही।

दूसरी बार भी आया कार्डियक अरेस्ट

कुछ देर बाद ही यात्री को दूसरी बार कार्डियक अरेस्ट हुआ और इस बार उसे होश में लाने में अधिक समय लगा। वेमाला ने यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल्स द्वारा जारी एक बयान में कहा कि कुल मिलाकर, उड़ान के लगभग दो घंटे तक उनकी नब्ज या रक्तचाप ठीक नहीं था, केबिन क्रू के साथ हम उन्हें कुल मिलाकर पांच घंटे तक जीवित रखने की कोशिश कर रहे थे।

सिख बच्चों के लिए मां ने बनाया खास हेलमेट पगड़ी के साथ पहनने में नहीं होगी दिक्कत

टोरंटो ।
भारत, कनाडा समेत कई देशों में दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनना जरूरी है। ऐसे में सिखों व उनके बच्चों को बहुत परेशानी आती है, क्योंकि वे साफा या पगड़ी पहनते हैं। ऐसी ही परेशानी का हल निकालने के लिए कनाडा में एक मां ने अपने बच्चों के लिए खासतौर से हेलमेट बनाया है। इसे पगड़ी के साथ पहना जा सकेगा।

कनाडा में रहने वाली सिख महिला टीना सिंह अपने बेटों के लिए काफी दिनों से ऐसा

हेलमेट तलाश रही थी, जो वे पगड़ी के साथ पहन सकें। जब वह कहीं नहीं मिला तो टीना सिंह ने खुद ही इसे डिजाइन कर बनवा लिया। पगड़ी के अनुकूल इन हेलमेट को सुरक्षा सर्टिफिकेट भी मिल चुका है। यानी दुर्घटना की दशा में बचाव में असरकारी पाए गए हैं। इन्हें सिख बच्चों के लिए खास तौर से डिजाइन किया गया है।

नहीं था अच्छा विकल्प, इसलिए तैयार किए

टीना सिंह ने कहा कि वे बच्चों के स्पोर्ट्स हेलमेट के लिए काफी समय से परेशान थीं। उन्हें अच्छे हेलमेट नहीं मिल रहे थे। हताश होकर उन्होंने खुद ही डिजाइन करने का प्रयास किया। यह प्रयास सफल रहा। टीना सिंह ने अपनी इस कामयाबी की कहानी इंस्टाग्राम पर साझा की है। इस पर उनकी खूब तारीफ हो रही है।

अब आपदा का लग सकेगा सटीक पूर्वानुमान, हिंद महासागर के द्विध्रुवीय तापमान बाढ़ की मुख्य वजह

वॉशिंगटन ।
ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में आग से लेकर पूर्वी अफ्रीका में बाढ़ आने के पीछे अहम भूमिका निभाने वाले हिंद महासागर द्विध्रुवीय (आईओडी) तापमान की मूल वजह खोजने का शोधकार्ताओं ने दावा किया है। अमेरिका के ब्राउन विश्वविद्यालय के अध्ययनकर्ताओं ने बताया कि इसकी मदद से दुनिया के किसी भी देश में आने वाली बाढ़, सूखे जैसी आपदाओं का सटीक पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। शोधकर्ताओं के अनुसार मौसम निर्धारित करने वाली इस पूरक परिघटना की वजह से हिंद महासागर में एक तरफ समुद्र के पानी का तापमान दूसरी तरफ के तापमान की तुलना में गर्म या ठंडा हो जाता है। इस तापमान में जितना अंतर बढ़ता है पूरे हिंद महासागर में उतनी ही चरम मौसमी परिस्थितियां बनती हैं। आईओडी को मिनी अल नीनो या इंडियन नीनो भी कहा जाता है।

10,000 वर्षों की जलवायु

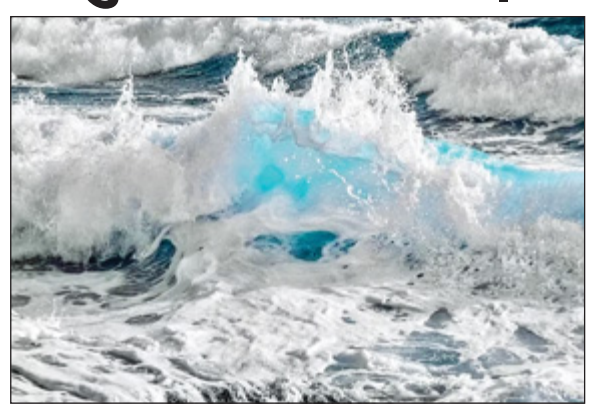

स्थितियों को खंगाला अध्ययन में भूगर्भीय रिकॉर्ड के विभिन्न सेटों से पुनर्निर्मित पिछली 10,000 वर्षों की जलवायु स्थितियों की तुलना एक उन्नत जलवायु मॉडल के सिमुलेशन से की गईं। साइंस एडवांस जर्नल में प्रकाशित इस शोध के नतीजों के मुताबिक उत्तर अमेरिका पर छाए विशाल ग्लेशियर 15,000 से 18,000 साल पहले बड़े पैमाने पर पिघले।

ऐसे चलेगा अनावृष्टि का पता - हिंद महासागर के दोनों छोरों के तापमान में अंतर की वजह से तय होता है कि किन क्षेत्रों में अनावृष्टि होगी व कहां सूखा पड़ेगा। ब्राउन विवि के प्रो.जेम्स रसेल कहते हैं, अध्ययन से यह समझने का एक यंत्रवत आधार है कि दो क्षेत्रों में बारिश के पैटर्न में दीर्घकालिक बदलाव समय क्यों आए हैं। इससे न केवल हिंद महासागर के पूर्वी-पश्चिमी द्विध्रुवों की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी, बल्कि बाढ़ और सूखे को लेकर सटीक पूर्वानुमान करने में भी मददगार साबित होगा।

इसके प्रभाव से एक बार सूख चुकी है दुनिया की सबसे बड़ी झील - शोधकर्ताओं के मुताबिक पूर्व-पश्चिम द्विध्रुव में, जहां पश्चिम (केन्या, इथियोपिया और सोमालिया) का पूर्वी (इंडोनेशिया) हिस्से के पानी की तुलना में ठंडा है। शोधकर्ताओं ने बताया जब पानी में गर्मी बढ़ती है तो इंडोनेशिया सहित आसपास के देशों में तेज बारिश होती है, जबकि पानी का तापमान कम होने पर पूर्वी अफ्रीका में सूखे की स्थिति पैदा होती है। करीब 17,000 वर्ष पहले ये प्रभाव चरम स्थिति में थे, जिसकी वजह से दुनिया की सबसे बड़ी विक्टोरिया झील पूरी तरह सूख गई थी।

अमेरिका में धुर-दक्षिणपंथियों के आगे समर्पण करने के बाद मैकार्थी चुने गए स्पीकर

वाशिंगटन ।
अमेरिका में रिपब्लिकन पार्टी के नेता केविन मैकार्थी 15वें दौर के मतदान के बाद आखिरकार कांग्रेस (संसद) के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रजेंटेटिव के स्पीकर चुने गए। 1859 के बाद कभी भी हाउस के स्पीकर के चुनाव के लिए मतदान इतना लंबा नहीं खिंचा था। बीते नवंबर में हुए चुनाव में सदन में रिपब्लिकन पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिला। लेकिन पार्टी के धुर दक्षिणपंथी धड़े से जुड़े सदस्यों ने 14 दौर के मतदान तक मैकार्थी का निर्वाचन रोके रखा।

अमेरिकी मीडिया में आई खबरों के मुताबिक धुर-दक्षिणपंथी खेमे ने इस दौरान मैकार्थी को अपनी लगभग प्रमुख मांगों को मानने के लिए मजबूर कर दिया। समझा जाता है कि इस तरह लगभग 20 सांसदों वाला यह धुर-दक्षिणपंथी खेमा मौजूदा सदन के एजेंडे को अपने मुताबिक ढलवाने में सफल हो गया है। मैकार्थी और धुर दक्षिणपंथी खेमे में बनी सहमति के दस्तावेज का एक हिस्सा उसे हाथ लगा है।

उसके मुताबिक मैकार्थी ने इस खेमे की कम से कम तीन प्रमुख मांगों को स्वीकार कर लिया है।

दोनों पक्षों के बीच हुए समझौते के मुताबिक मैकार्थी ने सरकार विनियोग विधेयकों और कर्ज सीमा के बारे में धुर-दक्षिणपंथी धड़े की मांग मान ली है। इसका मतलब यह होगा कि अगले दो साल हाउस में रिपब्लिकन पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी के बीच टकराव का नजारा देखने को मिलेगा। डेमोक्रेटिक हलकों में खास चिंता इस बात से पैदा हुई है कि अगर रिपब्लिकन पार्टी सरकार के कर्ज लेने की सीमा बढ़ाने पर राजी नहीं हुई, तो राष्ट्रपति जो बाइडन के लिए प्रशासन चलाना बेहद मुश्किल हो जाएगा।.

मैकार्थी वह नियम बदलने के लिए भी राजी हो गए हैं, जिससे स्पीकर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाना आसान हो जाएगा। विश्लेषकों के मुताबिक यह मांग मान कर मैकार्थी ने अपने सिर पर तलवार लटका ली है। इससे हमेशा उन्हें धुर दक्षिणपंथी सदस्यों के साये में काम करना पड़ेगा। इसके अलावा मैकार्थी इस बात पर भी राजी हो गए हैं कि सदन की शक्तिशाली कमेटियों में धुर-दक्षिणपंथी खेमे के सदस्यों को प्रमुखता से जगह दी जाएगी। मैकार्थी ने धुर दक्षिणपंथी सदस्यों से कई निजी वायदे भी किए हैं।

स्पीकर के चुनाव को लेकर इस हफ्ते जो गतिरोध देखने को मिला, उससे अमेरिकी लोकतंत्र के भविष्य को लेकर नई चिंताएं खड़ी हो गई हैं। इससे यह धारणा बनी है कि धुर-दक्षिणपंथी गुट अपनी कम ताकत के बावजूद रिपब्लिकन पार्टी को मनमाफिक ढंग से चलाने और उसके जरिए सारे देश पर अपना एजेंडा थोपने में सक्षम हो गया है। यह संकेत भी मिला है कि अब ये धड़ा खुद उन नेताओं के हाथ से निकल गया है, जिनकी वजह से धुर-दक्षिणपंथी एजेंडा अमेरिका में लोकप्रिय हुआ।

विश्लेषक स्टीफन कॉलिन्स ने अपनी एक टिप्पणी में लिखा है- 'मैकार्थी इस बात की ताजा मिसाल बने हैं कि 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' (मागा) नाम की जिस क्रांति को उग्रपंथियों ने लोकप्रिय बनाया, वह कैसे खुद से जुड़े रहे नेताओं को ही निगलने लगी है।' उन्होंने लिखा है- 'खुद डोनाल्ड ट्रंप भी मैकार्थी को समर्थन देने के लिए धुर-दक्षिणपंथियों को प्रेरित नहीं कर पाए, जबकि इस क्रांति के लेखक वे ही रहे हैं। उन्होंने ही 2020 के राष्ट्रपति चुनाव परिणाम को स्वीकार करने से इनकार कर कट्टरपंथियों को ताकतवर बनाया।